डेली कॉलेज, जूनियर स्कूल

हिंदी सामूहिक कविता पाठ - 2018-19

IVB

चाँद का कुरता

हठ कर बैठा चाँद एक दिन माता से यह बोला,
सिलवा दो माँ मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफ़र और यह मौसम जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो, कुरता ही कोई भाड़े का।

बच्चे की सुन बात, कहा माता ने, "अरे सलोने",
कुशल करे भगवान, लगे न तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं, मैं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
हो किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।

घटता-बढ़ता रोज़ किसी दिन, ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की आखों को तू, दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही यह बता, नाप तेरी किस रोज़ लिवाएँ,
सी दे एक झिंगोला जो, हर रोज़ बदन में आए।

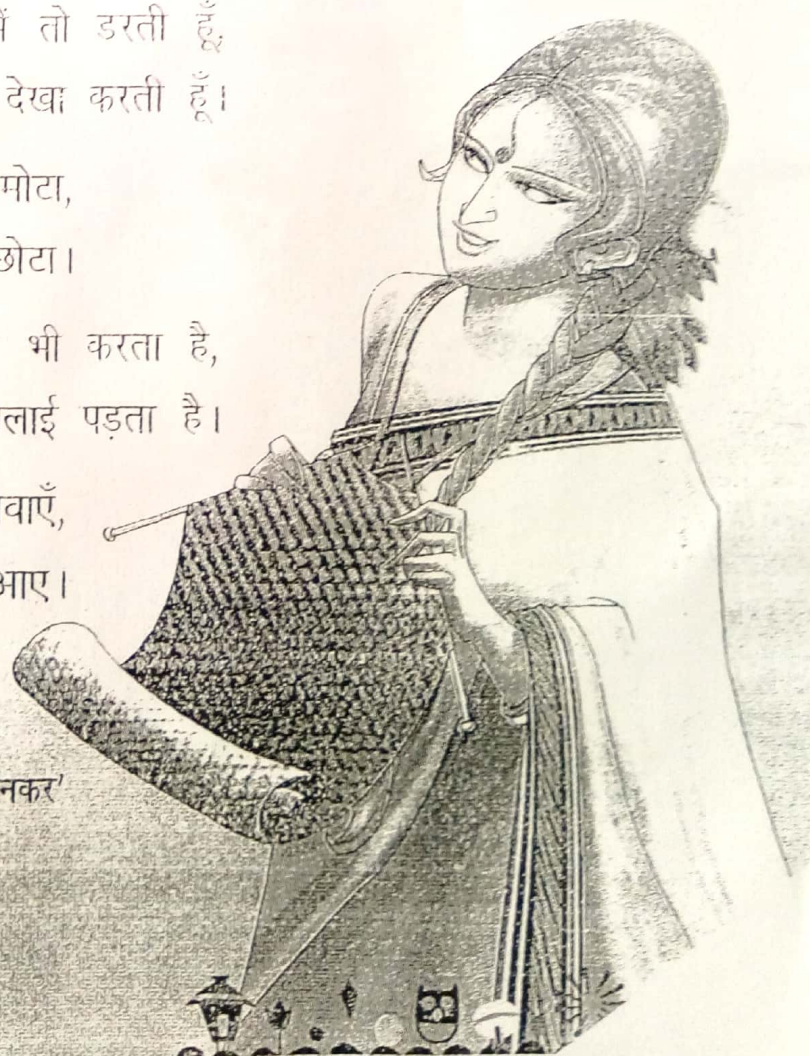

- श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

Scanned by CamScanner